''रवीन्द्र नाथ टैगोर के साहित्य में अध्यात्मिक विमर्श''

डॉ0 संदीप कुमार पाण्डेय

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपने कृतित्व में आध्यात्मिक मूल्यों का पुनर्स्थापन किया है कि पष्चिम के संषयवादी भौतिकवाद के स्थान पर पूर्व के आदर्षवाद रहस्यवाद के उन्नायक हैं। वे एकेष्वरवादी होते हुए भी सर्वेष्वावादी तथा अद्वैतवादी होते हुए भी द्वैत के परम उपासक थे। उनका धर्म दर्षन विपरीत मान्यताओं को अलौकिक गुच्छ था। वे आत्मा एवं परमात्मा की पृथक स्थिति को मानते हुए भी दोनों में सामंजस्य का प्रतिपादन कर रहे थे। ईष्वर का 'विष्वप्रज्ञानघन' स्वरूप मानव की आत्मीय सत्ता से पृथक नहीं था। वे 'नर–नारायण के रूप में मानवीय ईषवर की मान्यता के प्रतीक थे। नर और नारायण का सानिध्य एवं सहकार षाष्वत तत्व के रूप के संदर्भ में उनकी उभायता को माना। नारायण के परम पुरूषत्व अथवा उनकी पुरूषोत्तम स्थिति को पुरूष तथा प्रकृति के सामंजस्य का आधार माना। वे निर्गुण ईष्वर से सगुण परमात्मा की ओर प्रवृत्त हुए। प्रेम में परमात्मा की पूर्णता का दर्षन करते हुए वे उच्चतम आध्यात्मिक सत्त की अनुभूति करने लगे। वे मानव की नैतिक प्रकृति में विष्वास रखते थे। नैतिक आचरण के लिए ही मानव–जीवन का सृजन मनाते हुए पाप एवं अनैतिक आचरण के लिए नारायण द्वारा दंडित किये जाने का विधान, स्वीकार किया।